रुद्राष्टकम्

Tulsidas (16th century), in the Uttara Kanda of the Ramcharitmanas · rashikundli.com

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं
विभुं व्यापकं ब्रह्म वेदस्वरूपं
निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं
चिदाकाशमाकाशवासं भजेहं
निराकारमोंकारमूलं तुरीयं
गिरा ज्ञान गोतीतमीशं गिरीशं
करालं महाकाल कालं कृपालं
गुणागार संसारपारं नतोहं
तुषाराद्रि संकाश गौरं गभीरं
मनोभूत कोटि प्रभा श्री शरीरं
स्फुरन्मौलि कल्लोलिनी चारु गंगा
लसद्भालबालेंदु कंठे भुजंगा
चलत्कुंडलं भ्रू सुनेत्रं विशालं
प्रसन्नाननं नीलकंठ दयालं
मृगाधीशचर्माम्बरं मुण्डमालं
प्रियं शंकरं सर्वनाथं भजामि
प्रचंडं प्रकृष्टं प्रगल्भं परेशं
अखंडं अजं भानुकोटिप्रकाशं
त्रयःशूल निर्मूलनं शूलपाणिं
भजेहं भवानीपतिं भावगम्यं
कलातीत कल्याण कल्पान्तकारी

सदा सज्जनानन्ददाता पुरारी

चिदानंदसंदोह मोहापहारी

प्रसीद प्रसीद प्रभो मन्मथारी

न यावद् उमानाथ पादारविन्दं

भजंतीह लोके परे वा नराणां

न तावत्सुखं शांति सन्तापनाशं

प्रसीद प्रभो सर्वभूताधिवासं

न जानामि योगं जपं नैव पूजां

नतोहं सदा सर्वदा शंभु तुभ्यं

जरा जन्म दुःखौघ तातप्यमानं

प्रभो पाहि आपन्नमामीश शंभो

रुद्राष्टकमिदं प्रोक्तं विप्रेण हरतोषये

ये पठन्ति नरा भक्त्या तेषां शम्भुः प्रसीदति

यह पाठ कहाँ से लिया गया है: Sanskrit Wikisource, Hindi Wikipedia
RashiKundli संपादकीय टीम द्वारा लिखित और समीक्षित · rashikundli.com